

1107
ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

卷二

ॐ नमः शिवाय ॥ साम्ब साम्ब महाबाहो ॥ लूजा न्ववती मृत ॥ अली नाम महाबाहो ॥ य० र्थे न सुवेष्टु री ॥ १ ॥ यानि नामानि
गुह्यानि यद्विनालिगुह्यानि ॥ तानि न कीर्तयिष्यामि धृत्वा वत्सावधीवय ॥ २ ॥ तु विकर्तना विवर्धं धृत्वा माहो
राक्षसा वविश ॥ लाकयु कागक ॥ लीमान् लाकव कुं गेधेधन ॥ ३ ॥ लाक सादी लि लाकन ॥ कर्त्ता हर्त्ता तमिग
हा ॥ तयन सायन ॥ एव ॥ लुवि ॥ मकाथे वाहन ॥ ४ ॥ गरु सिह सीवु काव ॥ सर्वेय वनमस्तु न ॥ लक विग
ति विर्य ॥ सुव ॥ सु सदा मम ॥ ५ ॥ लवीना नाय द ॥ एव ॥ धन वृद्धि यल स ॥ न ॥ सुव वाज ॥ निरवात सु
बूला कषु विष्टु ॥ ६ ॥ य ॥ न ॥ मम हा वाहा ॥ द ॥ स ॥ न्ध ॥ मना दय ॥ सीमि सीयल ताहत्वा ॥ सर्वेया येश्य
मृच ॥ ७ ॥ कोयिकी वाचिक वाधि ॥ मान सैय द ॥ सु ॥ ल ॥ य ॥ यन त ॥ न ॥ सु ॥ यल ॥ न्ध ॥ ति ॥ समा ॥ न ॥ ८ ॥ न
ष ॥ य ॥ य ॥ द ॥ म ॥ न्ध ॥ या ॥ स ॥ न ॥ म ॥ व ॥ व ॥ लि ॥ म ॥ ल ॥ र ॥ म ॥ न्ध ॥ धू ॥ य ॥ म ॥ न्ध ॥ सु ॥ थ ॥ व ॥ ९ ॥ अ ॥ न्ध ॥ द ॥ न ॥ स ॥ न्ध ॥ न
व ॥ य ॥ लि ॥ य ॥ न्ध ॥ द ॥ कि ॥ ल ॥ य ॥ जि ॥ ना ॥ य ॥ म ॥ हा ॥ म ॥ न्ध ॥ स ॥ र्वे ॥ या ॥ य ॥ द ॥ न ॥ सु ॥ र ॥ १० ॥ ए ॥ व ॥ म ॥ हा ॥ रु ॥ र ॥ ग ॥ वा ॥ न्ध ॥ रा ॥ क ॥ ना ॥ ज ॥ ग ॥ दी ॥ न्ध
व ॥ अ ॥ म ॥ न्ध ॥ क ॥ वृ ॥ त ॥ न ॥ य ॥ न्ध ॥ वा ॥ क ॥ न ॥ धी ॥ य ॥ न ॥ ॥ साम्ब ॥ सु ॥ व ॥ वा ॥ ज ॥ न ॥ सु ॥ ला ॥ स ॥ का ॥ थ ॥ वा ॥ ह ॥ न ॥ ॥ दृ ॥ ग ॥ आ ॥ म ॥ नी ॥ नू ॥ ज ॥ ॥ न्ध ॥ न ॥ न्ध ॥ आ ॥ डा

॥ दामिनि ॥

१ ब्रह्मनिवकवर्च ॥ रत्नवनदवदवर्ण सर्वात्माययुजि ॥ सर्वमवधिनीयव कवचनयकालिनी ॥ यासादाख्यस्यमनुस्य
कवचमयकालय ॥ सर्वनकाकनीयव यदिस्तदास्मिमीयि ॥ ॥ श्रीरुगवानुवाच ॥ यासादाख्यस्यमनुस्य वामदक्षमवि
यीकैष्ठ्युदयसदागिवाधवगासाधकार्त्तिसिद्धविनियोग ॥ गिवासर्वदायातु यासादाख्यसदागिवा ॥ यत्कुरुनस्य
नृयामवदननुमदुग्धन ॥ यत्कुरुनात्मारुगवानुकाभयनिनकुरु ॥ मयुज्यस्यितीकात्मा ज्ञायुनकुरुममदा ॥
वदमूलसमासीना दक्षिणमूर्तिनयय ॥ सदासीमद्विगयातु यदुगिगलुस्वययधक ॥ द्वाविगलुस्वययधक ॥ द्वाविगलुस्वययधक ॥
क्षिभयनिनकुरु ॥ गिवात्तुत्तानीलक ॥ कर्णनकुरुसर्वदा ॥ विनोमलितीज नृयदिद्विनावीन्यवारुन ॥ सदाप
कुरुमगुर्क्ष सर्वमम्यनैयुदायक ॥ नकाकनसन्नयात्मा कुरुनृयीमदुग्धन ॥ मार्त्तुलेनवानिथी यदिभयनि
नकुरु ॥ उन्मुनाख्यामहोवीज सन्न यलियुवाकक ॥ सदासाबिलरुमोचनकुरु जियलधिय ॥ उद्विस्वधनिमी
लना समलेकुरुसर्वदा ॥ दक्षिणस्यागल्युनृया ॥ ३ ब्राह्मनिविनायक ॥ ज्ञायानाख्यामहादव ॥ द्वावस्ययिनिनकुरु ॥

[illegible]

श्रीलक्ष्मीनमः॥ ॥ श्रीगणेशाय॥ नमस्तु सर्वज्ञानां जननीं सद्गुरुं सद्गुरुं । प्रियमूर्तिं दयया क्रीं विष्णुं कर्मलक्ष्मीं ।
 त्वं सिद्धिस्तु स्वप्नस्वप्ना सुखं त्वं लाकया वनि । सन्ध्यां नमिष्ये हरं हरिं ॥ गुह्यामयं सवस्वगी ॥ यत्नं विशां मद्रा
 विशां गुह्यं विशां वल्लभं न । अस्तु विशां च यत्नं विमूर्तिं कलयायिनी ॥ अन्तीक्षिणीं यीवां कलयायिनीं
 स्वभवं च । सोम्या सोम्योर्जगद्गुरुं स्वयेन ददति विष्णुं न । कात्वेन्या त्वामृतं ददति । सर्वं यत्नं मयैव यत्नं ॥ अन्ध्यां सद्गुरुं
 वदवस्य योगिनिनीं गदाहरिं ॥ त्वया ददति विष्णुं कलयायिनीं । सकलं तु वल्लभं न । दिनं दृष्टाय मरुवत् त्वय्यदानीं
 समधिर्गुं ॥ दानां यत्नं सत्तु गन्धर्वं । सद्गुरुं न्यधनादिकीं । रवत्यं नमस्तु हाराण । नित्यं त्वं द्विदत्तं नृणां । नवी
 नां नान्यं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं मन्त्रं ॥ यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां ।
 यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां ।
 यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां । यत्नं त्वं द्विदत्तं नृणां ।

